भारतीय फिल्मों में व्यक्त प्रवासी जीवन

डॉ. संध्या गर्ग,

एसोसिएट प्रोफेसर,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

पापुलर हिंदी सिनेमा ने जनमानस को सदैव प्रभावित किया है। 1913 में प्रथम सिनेमा के बनने के बाद से ही नासकत्व, सामाजिक संदर्भ, राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान को सिनेमा में निभाए गये चरित्रों से जोड़ा जाने लगा। स्त्री सशक्तिकरण, पारिवारिक मूल्य, सामाजिक ज्वलंत मुद्दे, भारतीय प्रगति, युवा वर्ग की समस्याएँ, राजनीतिक घटनाक्रम सभी को पिछले सौ वर्षों में बॉलीवुड ने पर्दे पर जीवंत कर दिया है। कहीं घटनाओं से प्रभावित होकर ये चलचित्र बनाए गये और कभी इन चलचित्रओं ने घटनाओं को प्रभावित किया है।

उपरोक्त विषयों के साथ–साथ हिंदी सिनेमा का प्रिय विषय रहा है प्रवासी भारतीय। यदि हम प्रवासी भारतीय ;छवद.त्मेपकमदज प्दकपंदद्ध को परिभाषित करने का प्रयास करें तो ये भारत के नागरिक जिनके पास भारतीय पासपोर्ट है और वे अस्थायी तौर पर किसी दूसरे देश में रोजगार, आवास, शिक्षा तथा अन्य किसी उद्देश्य के लिए स्थानंतरित हो गये हैं। प्रवासी शब्द 1961 के आयकर अधिनियम के लिए प्रथमतः प्रयोग किया गया, जिसके अनुसार वर्ष में 182 दिन तथा लगातार चार वर्षों में 365 दिन भारत में रहना भारतीय निवासी होने के लिए आवश्यक है। अन्यथा वह प्रवासी भारतीय कहलायेंगे।

1990 में भूमंडलीकरण की तेज़ लहर में प्रवासी भारतीय भारतीयता की पहचान बन गये और व्यावसायिक सिनेमा ने इस विषय को हाथों–हाथ लिया। पर्दे पर एन.आर.आई. भारत में पाश्चात्य आधुनिकता व पश्चिम में भारतीय संस्कृति के प्रसार के दूत बन कर प्रस्तुत हुए। 1991 में सत्ता ने ष्प्दकपं ैपदपदहष को जो नारा दिया, उसे प्रवासी भारतीयों के साथ भी जोड़ा गया और प्रवासी भारतीय तेज़ी से उन्नति करते मध्यवर्ग के लिए भूमंडलीकरण की चुनौतियों से सामना करने हेतू रोल मॉडल की भूमिका में आ गये।

1970 के दशक में आई 'पूरब और पश्चिम' को प्रवासी भारतीयों के जीवन, चुनौतियों, समस्याओं, मूल्यों को दर्शाने वाली पहली फिल्म कहा जा सकता है। इससे पहले फिल्मों में पश्चिम को प्रयोग खूबसूरत दृश्यों के फिल्मांकन के लिए, चमत्कारिक तकनीक व अति आधुनिक वेशभूषाओं को तर्क संगत ठहराने के लिए ही किया जाता रहा। इस फिल्म में भारत कुमार (मनोज कुमार) इंग्लैंड में रह रहे भारतीयों से मिलते है जोकि आधुनिकता के नाम पर मदिरापान और धूम्रपान में डूबे हैं और अंततः भारतीय मूल्यों, मातृभूमि प्रेम को पश्चिम की जीवनशैली पर विजय पाते दिखाया गया। देशभक्ति की भावना से पूर्ण यह पिक्चर आदर्श की स्थापना के लिए ही बनाई गई। इसका गीत–संगीत आज भी देशभक्ति दर्शाने के लिए किए जा रहे कार्यक्रमों की पहली पसंद है।

1990 से पहले विदेश में रहने वाले भारतीयों को विपरीत मूल्यों में जीवन जीते हुए और फिर नाट्कीय परिवर्तन द्वारा भारतीय

संस्कृति की ओर लौटते हुए दिखाया गया। (1995) में 'दिल वाले दुल्हनिया ले जायेंगे' में विदेश में रहते हुए भी 'बलदेव सिंह' अपना देश, अपनी मिट्टी याद करते नज़र आते हैं, और इस तथ्य को ठुकराते हैं कि भारत में रहना ही भारतीय होने की निशानी है। प्रथम प्रवासी भारतीय दिवस पर दिए गये नारे 'ग्लोबल इंडियन फैमिली' की वकालत करते है। पहले दृश्य में ही विदेश के आलीशान घर में बैठे बलदेव सिंह अपने देश, अपने पंजाब को स्मरण करते हैं और दर्शक देशभक्ति की भावना से भर उठते है जब लहलहाते सरसों के खेतों में ''घर आजा परदेसी, तेरा देस बुलाये रे'' गाती हुई पंजाबी लड़कियाँ उन्हीं की वेशभूषा में दिखाई देती हैं। निश्चित रूप से विदेशों में बसे भारतीय इन दृश्यों से भाव–विभोर हो जाते हैं। ''कभी खुशी कभी गम'' में जब रोहन लंदन जाता है तो लंदन के बड़े–बड़े विश्व प्रसिद्ध स्मारकों के बीच से गुज़रते हुए जहाँ लंदन की जीवन शैली को दिखाया गया वहीं पृष्ठभूमि में वंदे मातरम का गीत और कल्पनात्मक रूप से लंदन की सड़कों पर छोटी–छोटी लड़कियों को तिरंगा बनाते दिखाया जाता है जोकि समाप्त होता है एक बड़े से घर में जहाँ नायिका पूजा करने के बाद अपनी सास–ससुर की तस्वीर के आगे सिर झुका रही है। अंजलि भारत का प्रतिनिधित्व कर रही है, विदेश में रहते हुए भी भारतीय मूल्यों को अपने में समेटे जैसे वह अखंड़ भारतीय परिवार का नया संस्करण है। फिल्म कोशिश करती है कि कैसे सात समुद्र पार भी भारतीय अपनी 'भारतीयता' को बनाए हैं और इसमें सफल भी रहती है।

'कल हो न हो' न्यूयार्क में रह रहे एक भारतीय परिवार की कहानी है। नैना जोकि प्रीति ज़िंटा द्वारा निभाया गया चरित्र है, एक टूटे परिवार की युवती है जोकि आदर्श और सच्चाई के बीच झूलते हुए हंसना भी भूल चुकी है। अमन (शाहरुख खान) से मिलने के बाद वह जीवन जीने लगती है। परंपरागत मूल्यों में आए परिवर्तनों को यह फिल्म बहुत बखूबी उभारती है। रोहित और नैना का विवाह, नैना द्वारा अमन के प्रति प्रेम की स्वीकारोक्ति वास्तव में वह आधुनिक बयार है जो बदलते मूल्यों की ताज़गी लेकर आई है, उसमें तूफान की तो कहीं भनक भी नहीं है।

''सलाम–नमस्ते'' एक अन्य फिल्म है जो एक भारतीय लड़के और लड़की की कहानी है जोकि अपने सपनों की तलाश में आस्ट्रेलिया गये हैं और सपअम.पद में रहने के लिए तैयार होते हैं ताकि वे पता लगा सकें कि वे एक सही शादीशुदा जीवन बिता पाऐंगे या नहीं। ऐसे में लड़की का गर्भवती होना, लड़के की प्रतिक्रिया, लड़की का आत्म सम्मान के लिए खड़े होना आदि घटनाक्रम भारतीय स्थितियों में शायद सही नहीं लग रहे थे। लेकिन यह भी सत्य है कि बदलते भारत की तस्वीर की झलक दे रहे थे। 'बैंड इट लाइक बेखम' भी एक प्रवासी भारतीय परिवार की पृष्ठभूमि को लेकर बनाई गई फिल्म है जहाँ जसमिन्दर सॉकर की प्रोफेशनल खिलाड़ी बनना चाहती है पर उसकी लंदन में रहने वाली सिक्ख फैमिली चाहती है कि वह एक अच्छे से लड़के से शादी करे और विवाह के बाद प्रसन्नता से किचन में रोटियाँ पकाए। कहानी उन प्रवासी भारतीय परिवारों का चित्रण करती है जो रहते विदेश में हैं पर सोच परंपरागत भारतीय ही है।

मानसून वैडिंग, वीर–जारा सहित बहुत सी फिल्मों में भारतीय त्योहारों और रीति–रिवाजों को जिस तरह फिल्मांकित किया गया है वे विदेशों में बसे भारतीयों की अपनी मिट्टी की खुश्बू बनाए रखने की ललक को ही दर्शाता है। 'नमस्ते लंदन' का गीत 'मैं जहाँ रहूँ, तेरी याद साथ है।' देश की याद की कसक का गीत है या पंकज उदास का गीत 'चिट्ठी आई है, बड़े दिनों के बाद हम बेवतनों को याद वतन की मिट्टी आई है।' इस प्रकार के भाव एन.आर.आई. के मन में छुपी अतीत स्तृतियों के साथ विदेश में रहने की अनकी मजबूरियों का भी बखूबी चित्रण करते

हैं। 'ये जवानी है दिवानी' में जब नैना और कबीर तुलना कर रहे हैं विदेश और देश की तो कबीर कहता है– ''इतवंकूंल उम चैंदजववद वि जीम वचमतं'' और नैना कहती है– ''मराठा मंदिर में दिल वाले दुल्हनिया ले जाएँगे विद पॉपकार्न'' कबीर की चुप्पी बताती है कि मबवदक वचजपवद उसे ज्यादा पसंद है। यह कुछ टिपिकल संवाद है जो इस विषय पर बनने वाली लगभग सभी फिल्मों में किसी एन.आर.आई. पात्र और देसी आदमी के बीच होते है।

''दिल्ली–6'' का रोशन चाँदनी चौक जैसी ज़िंदगी न्यूयार्क में चाहता है और न्यूयार्क की सुविधाएँ दिल्ली–6 में हो जाएँ। वह कन्फयूज है जब भौतिक सुख–सुविधाओं की बात होती है तो न्यूयॉर्क का जवाब नहीं पर जब मन की भूख, अपनापन, अकेलापन का इलाज ढूंढना हो तो दिल्ली–6 ही विकल्प नज़र आता है। 'पटियाला हाऊस' का गट्टू जोकि क्रिकेट का अच्छा खिलाड़ी है– इंग्लैंड के लिए खेलना चाहता है पर उसके पिता की सोच है कि वह ऐसा कैसे कर सकता है, उस देश के लिए कैसे खेल सकता है जो उसका है ही नहीं। ''माई नेम इज़ खान'' न्यूयार्य जैसी फिल्में आईने की दूसरी तरफ की फिल्में हैं जो इतनी चमकदार नहीं है, रेसिज़्म, एशियन होने के कारण शक के कटघरे में खड़े होना, अपमानित होना और बेबसी में उस ज़मीन पर रहना जो पाँव के नीचे से खिसकी जाती है। 'माई नेम इज़ खान' अमेरिका के सेट पर बनी फिल्म है जोकि वैश्विक दर्शकों को वैश्विक मीडिया का एक संबोधन है।

विकीपीडिया के अनुसार लगभग 24मीलियन प्रवासी भारतीय हैं जोकि एक बहुत बड़ा नंबर है। अमेरिका, ब्रिटेन, कैनेडा, अरब, गल्फ देशो में, फिजी, मारीशस में विशेष रूप से। ये भारतीय टेलिविजन देखते है, भारतीय त्योहार मनाते हैं और भारतीय अभिनेता–अभिनेत्री इनके रोल मॉडल हैं। बॉलीवुड़ इनके लिए तीन घंटे की फिल्म का माध्यम नहीं है बल्कि अपने देश से जुड़ने का माध्यम है। इसीलिए हिंदी सिनेमा विदेशों में वअमतेमें बवससमबजपवद को अलग कमाई मानकर चलता है। लंच बाक्स ने बाहर लगभग 28करोड़ कमाए जोकि उसकी घरेलू कमाई के बराबर ही है। इंगलिश–विंगलिश, आमीर खान की पी.के. ने तो 107 करोड़ बाहर कमाकर एक इतिहास ही बना दिया। निश्चित रूप से इनके अधिकत्तर दर्शक प्रवासी भारतीय ही है।

यहाँ एक तथ्य यह भी है कि हिंदी सिनेमा जिस प्रवासी भारतीय का चित्रण करता है वह क्या सही है? भारतीय दर्शक को प्रवासी भाईयों का वह विलासपूर्ण, जीवन, बड़ी–बड़ी गाड़ियाँ, कोठियाँ लुभाती हैं। उसे लगता है कि यदि यह संभव है कि वह भारतीय होकर, अपने त्योहारों, रिवाज़ों को निभाते हुए भी विदेशी ज़मीन पर अधिक संविधा पूर्वक जीवन जी सकता है तो विदेश क्या बुरा है, पर बलविंदर सोढ़ी जो कि एक होटल में नार्थ–अमेरिका में काम करते हैं ऐसा कहते हैं कि सिनेमा एन.आर.आई. के संघर्ष को क्यों नहीं दिखाता कि किस प्रकार अपने घर चलाने के लिए, एक अच्छा जीवन जीने के लिए वह दिन–रात काम करते हैं। ये वो प्रवासी भारतीय हैं जो रोल मॉडल नहीं है पर एक सच्चा चित्र प्रस्तुत करते हैं।

एक अन्य तथ्य है प्रवासी भारतीयों का भारत लौट कर अपना जीवन प्रारंभ करना। ''विरुद्ध'' की नायिका इंडियन लड़के से विवाह करती है। वह ड्रिंक भी करती है, छोटी ड्रेस भी पहनती है, पर भारतीय जीवन से भी प्रभावित है। ''नमस्ते लंदन'' का नायक विदेश से लौटकर अपनी पत्नी को भी साथ लाता है और अंत में पंजाब के खेतों में ट्रैक्टर पर प्रसन्नता से भरे यह 'कपल' बदलते भारत की तस्वीर है जहाँ पूरब और पश्चिम मिल रहे हैं और एक दूसरे को अपना रहे हैं। स्पष्ट है कि बॉलीवुड़ सिनेमा

प्रवासी भारतीयों के चित्रण में यथार्थ की ज़मीन पर आ रहा है जहाँ उनका संघर्ष, अधिक स्पष्ट दिख रहा है, वे भारत से बाहर हैं पर जहाँ है वह कल्पना लोक नहीं है बल्कि सच का कठोर सामना है जिसमें रहते हुए वे अप्रसन्न नहीं हैं पर भारत लौटने में भी उन्हें कोई गुरेज़ नहीं। यह अपरोक्ष रूप से भारत के विश्व–ताकत बनने के भी संकेत हैं जिसके मजबूत स्तंभ है प्रवासी भारतीय और हिंदी सिनेमा इसे पूरी ईमानदारी से चित्रित कर रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

Copyright © 2016, Dr. Sandhya Garg. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.